

द्वितीयः पाठः

## ऋतुचित्रणम्

प्रस्तुत पाठ आदिकवि महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण के किष्किन्धा, अरण्य तथा सुन्दर काण्डों से संकलित है। रामायण संस्कृत साहित्य का आदि महाकाव्य माना जाता है। इस ग्रन्थ का सांस्कृतिक महत्त्व बहुत अधिक है। इसमें महर्षि वाल्मीकि ने जीवन के आदर्शभूत और शाश्वत मूल्यों का निर्देश किया है। इसमें राजा, प्रजा, पुत्र, माता, पत्नी, पति, सेवक आदि के पारस्परिक संबंधों का एक आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। इस महाकाव्य में वाल्मीकि का प्रकृति-चित्रण अत्यन्त मनोरम एवं हृदयाकर्षक है।

इस पाठ में 1-3 श्लोकों में वसन्त ऋतु का, 4-6 श्लोकों में वर्षा ऋतु का, 7वें एवं 8वें श्लोक में शरद् ऋतु का, नवम में हेमन्त तथा दशम में शिशिर ऋतु का और एकादश में चन्द्रोदय का विशद एवं मनोहारी वर्णन किया गया है।

सुखानिलोऽयं सौमित्रे! कालः प्रचुरमन्मथः।

गन्धवान् सुरभिर्मासो जातपुष्पफलद्रुमः॥1॥

पुष्पभारसमृद्धानि शिखराणि समन्ततः।

लताभिः पुष्पिताग्राभिरुपगूढानि सर्वतः॥2॥

पतितैः पतमानैश्च पादपस्थैश्च मारुतः।

कुसुमैः पश्य सौमित्रे! क्रीडन्निव समन्ततः॥3॥

(वा.रा.किष्किन्धा. 1.10, 9, 13)

क्वचित्प्रकाशं क्वचिदप्रकाशं नभः प्रकीर्णाम्बुधरं विभाति।

क्वचित्क्वचित्पर्वतसन्निरुद्धं रूपं यथा शान्तमहार्णवस्य॥4॥

समुद्रहन्तः सलिलाऽतिभारं बलाकिनो वारिधरा नदन्तः।

महत्सु शृङ्गेषु महीधराणां विश्रम्य विश्रम्य पुनः प्रयान्ति॥5॥

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।  
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवङ्गाः॥६॥

(वा.रा.किष्किन्धा. 28.17, 22, 26)

जलं प्रसन्नं कुसुमप्रहासं क्रौञ्चस्वनं शालिवनं विपक्वम्।  
मृदुश्च वायुर्विमलश्च चन्द्रः शंसन्ति वर्षव्यपनीतकालम्॥७॥  
लोकं सुवृष्ट्या परितोषयित्वा नदीस्तटाकानि च पूरयित्वा।  
निष्पन्नशस्यां वसुधां च कृत्वा त्यक्त्वा नभस्तोयधराः प्रयाताः॥८॥

(वा.रा.किष्किन्धा. 30, 53, 57)



रविसङ्क्रान्तसौभाग्यस्तुषारारुणमण्डलः।  
निःश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते॥९॥

वाष्पसञ्छन्नसलिला रुतविज्ञेयसारसाः।  
हिमार्द्रबालुकास्तीरैः सरितो भान्ति साम्प्रतम्॥10॥

(वा.रा. अरण्य 16, 9, 13, 24)

हंसो यथा राजतपञ्जरस्थः  
सिंहो यथा मन्दरकन्दरस्थः।  
वीरो यथा गर्वितकुञ्जरस्थ-  
श्चन्द्रोऽपि बभ्राज तथाम्बरस्थः॥11॥

(वा.रा.सुन्दर 5, 4)

### शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

|                         |  |
|-------------------------|--|
| रविसंक्रान्तसौभाग्यः    | - रविणा सूर्येण संक्रान्तं ध्वस्तं सौभाग्यं प्रकाशः यस्य सः, सूर्य के द्वारा जिसका प्रकाश मलिन कर दिया गया है। |
| तुषारारुणमण्डलः         | - तुषारेण हिमेन अरुणं अरुणवर्णं मण्डलं यस्य सः, तुषार के समान जिसका मण्डल अरुण वर्ण कर दिया गया है।            |
| निःश्वासान्धः           | - श्वास से मलिन किया गया।  |
| आदर्शः                  | - दर्पण।   |
| सुखानिलः                | - आनन्द देने वाली हवा।   |
| मन्मथः                  | - कामदेव।  |
| गन्धवान्                | - सुगन्ध देने वाली (गन्ध् + मतुप् प्र., ए.व.)।   |
| सुरभिर्मासः             | - वसन्त ऋतु।   |
| समन्ततः                 | - चारों ओर से।   |
| पुष्पिताग्राभिरुपगूढानि | - खिले हुए फूलों से भरी हुई।   |
| पतितैः                  | - गिरे हुए।  |
| पतमानैः                 | - गिरते हुए।   |
| पादपस्थैः               | - पेड़ों पर स्थित।   |
| प्रकीर्णाम्बुधरम्       | - आकाश जिसमें बादल फैले हैं।   |
| विभाति                  | - शोभा दे रहा है (वि + भा + लट् प्र.पु.ए.व.)।  |
| पर्वतसन्निरुद्धम्       | - पर्वतों से घिरे हुए।   |
| महार्णवस्य              | - समुद्र का।   |
| समुद्रहन्तः             | - वहन करते हुए (सम् + उत् + वह् + शतृ प्र.ब.व.)।   |
| बलाकिनः                 | - बगुलों से युक्त।   |

|                  |   |  |
|------------------|---|--|
| नदन्तः           | - | गरजते हुए (नद् + शतृ + प्र.ब.व.)।                    |
| समाश्वसन्ति      | - | प्रसन्न होते हैं (सम् + आ + श्वस् + लट् + प्र.ब.व.)। |
| वनान्ताः         | - | वन प्रदेश के एक भाग में।                             |
| शिखिनः           | - | मोर।   |
| प्लवङ्गाः        | - | मेंढक।   |
| कुसुमप्रहासम्    | - | खिले हुए फूलों से युक्त।                             |
| क्रौञ्चस्वनम्    | - | क्रौंच पक्षी की आवाज।                                |
| शालिवनम्         | - | धान का खेत।  |
| विपक्वम्         | - | पका हुआ।   |
| शंसन्ति          | - | सुशोभित कर रहे हैं (शंस् + लट् प्र.पु.ब.व.)।         |
| वर्षव्यपनीतकालम् | - | वर्षा ऋतु बीतने के बाद का समय अर्थात् शरद् ऋतु।      |
| तटाकानि          | - | तालाब।   |
| निष्पन्नशस्याम्  | - | खेती-बाड़ी का कार्य संपन्न हो गया जिसका, वह।         |

### ❦ अभ्यासः ❦

#### 1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्

- (क) अयं पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?
- (ख) वसन्ते समन्ततः गिरिशिखराणि कीदृशानि भवन्ति?
- (ग) मारुतः कीदृशैः कुसुमैः क्रीडन्निव अवलोक्यते?
- (घ) प्रकीर्णाम्बुधरं नभः कथं विभाति?
- (ङ) कस्यातिभारं समुद्वहन्तः वारिधराः प्रयान्ति?
- (च) वर्षती मत्तगजाः किं कुर्वन्ति?
- (छ) शरदृतौ चन्द्रः कीदृशो भवति?
- (ज) कानि पूरयित्वा तोयधराः प्रयाताः?
- (झ) अस्मिन् पाठे 'तोयधराः, इत्यस्य के के पर्यायाः प्रयुक्ताः?
- (ञ) कीदृशः आदर्शः न प्रकाशते?
- (ट) शिशिरतौ सरितः कैः भान्ति?

#### 2. रिक्तस्थानानि पूरयत

- (क) समन्ततः ..... शिखराणि सन्ति।
- (ख) नभः ..... विभाति।
- (ग) वारिधराः महीधराणां शृङ्गेषु ..... प्रयान्ति।

- (घ) तोयधरा: ..... प्रयाता:।  
 (ङ) निःश्वासान्ध आदर्श इव ..... न प्रकाशते।

3. अधोलिखितानां सप्रसङ्गं व्याख्या कार्या

- (क) मारुतः कुसुमैः पश्य सौमित्रे! क्रीडन्निव समन्ततः।  
 (ख) निःश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते।।

4. प्रकृतिं प्रत्ययं च योजयित्वा पदरचनां कुरुत

कृ+क्त्वा (त्वा), क्रीड्+शतृ, गन्ध+मतुप्, सम्+नि+रुध्+क्त।

5. प्रकृतिप्रत्ययविभागः क्रियताम्

त्यक्त्वा, विश्रम्य, समुद्वहन्तः, पतमानः, हिमवान्।

6. अधोलिखितान् शब्दान् आश्रित्य वाक्यरचनां कुरुत

क्रीडन्, गन्धवान्, विश्रम्य, पूरयित्वा, नभः, नदन्तः, त्यक्त्वा, साम्प्रतम्, शिखिनः,  
 प्रयाति।

7. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत

- (क) सुख + अनिलः + अयम् = .....  
 (ख) प्रकीर्णाम्बुधरम् = ..... + .....  
 (ग) क्रीडन् + इव = .....  
 (घ) चन्द्रोऽपि = ..... + .....  
 (ङ) निःश्वास + अन्धः = .....

8. अधोलिखितानां कर्तृक्रियापदानां समुचितं मेलनं कुरुत

- (क) प्लवङ्गाः - नदन्ति  
 (ख) वनान्ताः - समाश्वसन्ति  
 (ग) शिखिनः - भान्ति  
 (घ) नद्यः - ध्यायन्ति  
 (ङ) मत्तगजाः - वर्षन्ति  
 (च) प्रियाविहीनाः - नृत्यन्ति  
 (छ) घनाः - वहन्ति

9. अधोलिखितयोः श्लोकयोः अन्वयं प्रदर्शयत  
 (क) समुद्रवहन्तः सलिलातिभारं ..... प्रयान्ति।  
 (ख) हंसो यथा ..... तथाम्बरस्थः।
10. अधोलिखितेषु श्लोकेषु प्रयुक्तालङ्काराणां निर्देशं कुरुत  
 (क) पतितैः पतमानैश्च ..... क्रीडन्निव समन्ततः।  
 (ख) वहन्ति वर्षन्ति ..... प्लवङ्गाः।  
 (ग) रविसङ्क्रान्तसौभाग्यः ..... चन्द्रमा न प्रकाशते।
11. अधोलिखितश्लोकेषु छन्दो निर्देशः कार्यः  
 (क) क्वचित्प्रकाशम् ..... शान्तमहार्णवस्य।  
 (ख) हंसो यथा ..... तथाम्बरस्थः।  
 (ग) रविसङ्क्रान्तसौभाग्यः ..... न प्रकाशते।

### ● योग्यताविस्तारः ●

#### (क) भावविस्तारः

महाकविना कालिदासेन ऋतुसंहारमिति काव्ये षण्णाम् ऋतूनां क्रमेण वर्णनं विहितम्। यथा -

#### ग्रीष्मः

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसञ्चयः।  
 दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये॥

#### वर्षा

ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरस्तडित्यताकोऽशनिशब्दमर्दलः।  
 समागतो राजवदुद्धतद्युतिर्धिनागमः कामिजनप्रियः प्रिये॥

#### शरत्

काशांशुका विकचपद्मनोज्ज्वलवक्त्रा  
 सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या।  
 आपक्वशालिरुचिरानतगात्रयष्टिः  
 प्राप्ता शरन्नववधूरिव रूपरम्या।

हेमन्तः

नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः प्रफुल्ललोधः परिपक्वशालिः।  
विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो हेमन्तकालः समुपागतोऽयम्॥

शिशिरः

न चन्दनं चन्द्रमरीचिशीतलम्  
न हर्म्यपृष्ठं शरदिन्दुनिर्मलम्।  
न वायवः सान्द्रतुषारशीतला  
जनस्य चित्तं रमयन्ति साम्प्रतम्॥

वसन्तः

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं  
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः।  
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः  
सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते॥

(ख) भाषिकविस्तारः

अधोलिखितानां शब्दानां रूपाणि साधनीयानि

शिखी - शिखिन् + प्रथमा एकवचन (शिखिनौ, शिखिनः)

करी - करिन् + प्रथमा एकवचन

गुणी - गुणिन् + प्रथमा एकवचन

बली - बलिन् + प्रथमा एकवचन

